डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी द्वारा पठन–पाठन की रुचि : नई दिशाएँ विषयक परिसंवाद का आयोजन

लेखकों को युवाओं की आकांक्षाओं और उम्मीदों को प्रतिबिम्बित करना होगा – अनंत विजय
डिजिटल माध्यम से साहित्य सृजन, प्रकाशन और वितरण का लोकतंत्रीकरण हुआ है – बालेंदु शर्मा 'दाधीच'

नई दिल्ली। 22 नवंबर 2021; साहित्य अकादेमी द्वारा आज राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के अवसर पर पठन–पाठन की रुचि : नई दिशाएँ विषयक परिसंवाद का आयोजन किया गया। आभासी मंच पर आयोजित इस संगोष्ठी में प्रख्यात पत्रकार अनंत विजय; निदेशक भारतीय जन संचार संस्थान संजय द्विवेदी; तकनीकिविद बालेंदु शर्मा 'दाधीच'; संपादक एवं बाल साहित्यकार; पंकज चतुर्वेदी; कवि एवं कला आलोचक राजेश कुमार व्यास तथा कहानीकार गीताश्री ने भाग लिया। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव का लिखित स्वागत–भाषण साहित्य अकादेमी के हिंदी संपादक एवं कार्यक्रम के संचालक अनुपम तिवारी ने प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि नई पीढ़ी में पठन–पाठन की रुचि जाग्रत करने के लिए नए तकनीकी माध्यमों के सहारे नए विषय भी सोचने होंगे। राजेश कुमार व्यास ने अपने वक्तव्य में कहा कि तकनीकी माध्यमों ने पाठ्य–पुस्तकों को बड़े स्तर पर सर्वसुलभ तो बनाया है, लेकिन यह कहना गलत होगा कि लोगों में पुस्तकें पढ़ने की प्रवृत्ति कम हुई है। उन्होंने समीक्षा या सोशल मीडिया में कुछ विशेष पुस्तकों को जानबूझ कर बेस्ट सेलर सिद्ध करने की प्रवृत्ति पर टिप्पणी करते हुए कहा कि किताबों की दुनिया में अच्छा विषय ही टिकता है। अतः इस तरह का प्रचार–प्रसार निरर्थक है। उन्होंने साहित्य अकादेमी और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा अच्छी और सस्ती पुस्तक प्रकाशित करने की प्रशंसा करते हुए कहा कि इसी तरह के प्रयास कई अन्य संस्थाओं/प्रकाशकों को करने होंगे। प्रख्यात पत्रकार एवं भारतीय जनसंचार के निदेशक संजय द्विवेदी ने कहा कि पुस्तकें कठिन समय में उम्मीद लेकर आती हैं और पठनीयता पर कहीं कोई संकट नहीं है। उन्होंने मुद्रित पुस्तकों की पहुँच बढ़ाने के लिए किए जाने वाले प्रयासों की चर्चा की। उन्होंने भाषायी प्रकाशन को महत्त्व देने और पुस्तकालयों के रख–रखाव को बेहतर बनाने की आवश्यकताओं पर भी जोर दिया।

बालेंदु शर्मा 'दाधीच' ने कहा कि तकनीक के कारण एक नया पाठक वर्ग तैयार हुआ है और उसकी पाठकीय प्रवृत्तियों में भी बदलाव आया है। उन्होंने मोबाइल और इंटरनेट की पहुँच के आँकड़े देते हुए कहा कि पुस्तकों की दुनिया अब आम पाठकों के लिए भी खुल गई है और उसका दायरा सीमित नहीं है। डिजिटल माध्यम पर उपलब्ध सामग्री एक तो सदा के लिए उपलब्ध है, दूसरा बहुत कुछ वह निशुल्क भी उपलब्ध है। अतः वह समय और देश की सीमाओं से भी पार जाती है। डिजिटल माध्यम के आने से साहित्य सृजन, प्रकाशन और वितरण का लोकतंत्रीकरण हुआ है। प्रख्यात बाल साहित्यकार पंकज चतुर्वेदी ने बाल साहित्य की पुस्तकों और उनके प्रकाशन पर विस्तार से बात करते हुए कहा कि बच्चे भी तकनीकी ज्ञान से अछूते नहीं है लेकिन उन्हें पठन–पाठन के लिए स्टीरियो टाइप कथा कहानियों से हटकर कुछ नया देने की ज़रूरत है, जिससे वे पठन–पाठन का नैसर्गिक आनंद ले सकें। उन्होंने कहा कि पुस्तकें केवल नौकरी पाने के लिए नहीं बल्कि पढ़ने का सुख प्राप्त करने के लिए होनी चाहिए। लेखक प्रकाशकों को बच्चों के सामने नए जीवन मूल्यों को स्थापित करने के लिए कार्य करना होगा। कथाकार एवं पत्रकार गीताश्री ने अपनी बात रखते हुए कहा कि बेहतर बाल साहित्य के साथ–साथ हमें कथेतर विधाओं पर भी काम करने की जरूरत है। उन्होंने लेखकों को पाठक वर्ग तैयार करने के लिए भी कहा। आगे उन्होंने कहा कि तकनीकी द्वारा पैदा हुई नई भाषा ने एक बड़े पाठक वर्ग को अपनी ओर आकर्षित किया है। हमें उनका सम्मान करते हुए, उनकी रुचि के विषयों और उनकी रुचि की विधाओं में प्रस्तुत करना होगा। वरिष्ठ पत्रकार अनंत विजय ने कहा कि पुस्तकों में रुचि जगाने के लिए लेखकों को विषयों की विविधता लानी होगी और किसी विशेष विचारधारा के अनुसार एजेंडाबद्ध लेखन से बचना होगा। आगे उन्होंने कहा कि वर्तमान लेखकों को अपने लेखन में युवाओं की आकांक्षाओं और उम्मीदों को प्रतिबिम्बित करना होगा, तभी एक बड़ा नया पाठक वर्ग तैयार होगा।

के. श्रीनिवासराव